REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

साठोत्तरी कविता की भाषा में बिम्ब एवं प्रतीक विधान

मुक्ता रानी कंचकार[1] & डॉ. परमानन्द तिवारी[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]प्राचार्य, शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर (म.प्र.).

सारांश –

साठोत्तरी कविता में अभिव्यंजना शिल्प के अन्तर्गत बिम्ब, प्रतीक, संगीत, छन्द, भाषा, शिल्पगत प्रयोग की योजनाएँ होती हैं। हिन्दी साहित्य में बिम्ब शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द (इमेज) के पर्याय के रूप में होता है। बहुधा बिम्ब को चित्र, प्रतिभा आदि पर्याय शब्दों के द्वारा भी सूचित किया जाता है। कवि अपनी अनुभूति की सफल अभिव्यक्ति हेतु काव्य–बिम्ब को उपादान तत्त्व के रूप में प्रयोग करता है। काव्य में बिम्ब का अस्तित्व आदि काल से है।

मुख्य शब्द – साठोत्तरी, कविता, अभिव्यंजना एवं प्रतीक विधान।

प्रस्तावना –

आज काव्य अधिक यथार्थानुपेक्षी होने से भी उसमें बिम्ब का महत्त्व बढ़ा है। अंग्रेजी में 'इमेज' शब्द का अर्थ है वस्तु की "छाया अनुकृति, सादृश्य या समानता। यह किसी व्यक्ति या पदार्थ की प्रतिकृति है। यह प्रतिमूर्ति, मानस–चित्र या काल्पनिक चित्र को प्रकट करता है। यह मानस चित्र या प्रतिकृति का द्योतक है यह किसी निर्जीव या सजीव वस्तु की अनुकृति या सदृश्यता है। भारतीय भाषा कोशों में भी बिम्ब शब्द का अर्थ 'इमेज' से मिलता जुलता है। बिम्ब का अर्थ प्रतिबिम्ब छाया प्रतिमूर्ति आदि। यह वस्तु की प्रतिछाया है। किसी मूलवस्तु की प्रतिकृति, प्रतिछाया या प्रतीक होता है।"[1] इस प्रकार 'इमेज' का हिन्दी में पर्याय होगा 'प्रतिमा'।

काव्य बिम्ब का तात्पर्य है किसी वस्तु या पदार्थ का काव्य में प्रत्यंकन। एक ही वस्तु और दृश्य अनेक कवियों के मन में भिन्न–भिन्न प्रभाव डालते हैं इस प्रभाव को अपनी भावयित्री व कारयित्री प्रतिभा के संयोग से यथातथ्य दर्शक काव्य बिम्ब कवि बनाता है।

साठोत्तरी कविता ने भाषा की बिंबधर्मिता पर बल दिया। नवगीत उस विचार से अछूता नहीं रह सका। कविता के बाद प्रायः सभी तरह की कविता का एक प्रमुख तत्व माना गया है। अब साठोत्तरी कविता में खुलापन और विषय वैविध्य अधिक आया है। जीवन में प्राप्त संवेदना कवि पूर्ण रूप से अभिव्यक्त कर देना चाहते हैं इसलिए बिम्बात्मक प्रयोगों का आधिक्य हुआ है। साठोत्तरी कविता में बिम्बों को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। बिम्बात्मकता गीतों को अधिक संवेद्य और भावों को साकार करने में सहायक सिद्ध होती है। जगदीश गुप्त, माधुर, केदार, वीरेन्द्र मिश्र, सुदामा पाण्डे, शमशेर बहादुर सिंह, देवताले, श्रीकान्त वर्मा, रामदरश मिश्र आदि के कविता में बिम्बों की महत्व दिया गया है। बिम्ब के अनेक प्रकार हो सकते हैं। अनेक आधारों पर उनका

वर्गीकरण अनेक ग्रंथों में प्राप्त है, उसकी पुनरावृत्ति यहां अनावश्यक होगी। हमें यही देखना इष्ट है कि साठोत्तरी कविता में बिम्ब विधान की छवि किस तरह उभरी है। यह बात सही है कि कालजयी साठोत्तरी रचना में प्रायः सभी प्रकार के बिम्ब प्राप्य हैं।

साठोत्तरी कविता बिम्बों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। 'बिम्ब' उसका मूल सौन्दर्याधायक तत्व है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यही साठोत्तरी कविता के सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन का प्रथम एवं सर्वप्रमुख विवेचनीय उपकरण भी है। विविधता और परिमाण, गुणवत्ता और सार्थकता किसी भी दृष्टि से देखें साठोत्तरी कविता का बिम्ब–विधान आधुनिक हिन्दी कविता में विशेष महत्व का अधिकारी है। बिम्ब बोध को किसी भी कवि की निजी चेतना तथा उसके व्यक्तित्व का दर्पण माना गया है। जिस प्रकार दर्पण में हम स्वयं का प्रतिबिम्ब देखते है और उस प्रतिबिम्ब से निष्पन्न रूप के विषय में अपनी विविध धारणायें सृजित करते हैं।

काव्य शिल्प के आधार पर शमशेर बहादुर की काव्य चेतना के विभिन्न सोपान है। उनके काव्य बिम्ब जगत, प्रकृति, मानव तथा इन सबके चैतन्य से संबंधित है। 'भारत की आरती' शीर्षक कविता में कवि का विश्वास काव्यमय बिम्ब की सर्जना करता है – "जन का विश्वास ही हिमालय है/भारत का जन–मन ही गंगा है/हिन्दी महासागर लोकाशय है/यही शक्ति सत्य को उभारती/यह किसान कमकर की भूमि है/पावन बलिदानों की भूमि है/भव के अरमानों की भूमि है/मानव इतिहास को सँवारती।"[2]

इस प्रकार कवि शमशेर बहादुर सिंह ने रूप बिम्बों में प्रकृति के सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किये है। इन्द्र धनुषी ताल, कोठरी में पड़ती धूप का चित्र, दिन और सांझ के चित्र, रात्रि का चित्र, स्पर्श बिम्ब के अन्तर्गत आस्वाद का संकेत, ध्वनि बिम्ब, कर्ण बिम्ब का दृश्य इनकी रचनाओं में सहसा मूर्त हो उठता है। मेघ की गर्जना, मोर की हर्षित पुकार, ध्वनि बिम्ब का विधान करती है। रूप बिम्बों में कवि का रोमांटिक व्यक्तित्व उभरकर प्रदर्शित हुआ है। भाव बिम्बों में सावन का आकाश, पत्थर के पसरने का बिम्ब, नारी के मूर्त चित्रों में प्रेम का चित्रण, शरीर स्वप्न, नारी सौन्दर्य को मांसलता इनकी रचनाओं में भाव बिम्बों के माध्यम से चित्रित है। सचमुच शमशेर बहादुर प्रयोगवाद के साथ साठोत्तरी कविता के प्रभाववादी कलाकार है। इनके बिम्ब प्रयोगों में शिल्पगत नवीनता समायी हुई है।

साठोत्तरी कविता के काव्य बिम्ब के अनेक ऐसे उदाहरण है जिसे कवि ने अपने गीतों में सम्मिलित किया है। माघ, दस बजे दिन, रात में गाँव, खोमश धड़कने, चाँद की चाह, ज्वर की गाँठ, हम सभी बेचकर आये है अपने सपने, इस घर का यह सूना आगन, दोपहर नदी स्नान, खोल दिया पिंजरा, विष कन्या के नाम में दृश्य बिम्ब, भाव बिम्ब, कर्म बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, ध्वनि बिम्ब, दार्शनिक बिम्ब और प्रकृति बिम्ब का स्पष्ट रूप दिखाई देता है।

रामदरश जी के काव्य में बिम्ब सर्जना का प्रधान आधार प्रकृति है। उन्होंने प्राकृतिक उपकरणों से बिम्बों में कलात्मकता लाई है। उन्हें ठोस व संश्लिष्ट बनाया है, साथ ही उसमें गत्यात्मक प्राणवत्ता लाने हेतु मानवीयकरण की प्रणाली अपनाई है। यथा– धूप जलता हुआ सागर दीप छाहों के/सरक लाते पिघल कर/मछलियों जैसे मेरा पल–छिन/उतर रोज आते हैं सतह पर/जाल कंधों पर धरे सुबह आता है/हर शाम खाली लौट आता है।[3]

साठोत्तरी कवियों में सौमित्र मोहन ने अपनी कविताओं में स्वप्न, दिवास्वप्न, अतिरंजना और मनोवैज्ञानिक गुत्थियों के दबाव का अत्यन्त सार्थक प्रयोग किया है। उनके काव्य संसार में सब कुछ गड्ड–मड्ड है और वस्तुओं के बीच तार्किक प्रतीति का पूर्णतः लोप हो चुका है। उनकी कविताएँ कुल मिलाकर कवि के मनोजगत की एब्सर्डिटी को ही मूर्तिमान करती है। इस तरह का सबसे प्रभावशाली प्रयोग उनकी बहुचर्चित कविता 'लुकमान अली' में किया गया है – 'लुकमान अली के लिए स्वतंत्रता उसके कद से केवल तीन इंच बड़ी है/ वह बनियान की जगह निरंगा पहन कर कलावाजियाँ खाता है/वह चाहता है कि पाँचवें आम चुनाव में बौनों का प्रतिनिलधित्व करे/ उन्हें टाफियाँ बाँटे/जाति और भाषा की कसमें खिलाये /अपने पाजामें फाड़ कर सबके चूतड़ों पर पैबन्द लगाये /वह गधेकी /सवारी करेगा /अपने गुप्तचरों के साथ सारी/ प्रजा पर हमला बोल देगा।'[4]

विश्लेषण –

साठोत्तरी कविता पर गुलाटी जी का स्वतंत्र मत है– "साठोत्तरी कविता बातचीत, संवाद, वार्तालाप के रूप में प्रकट की जा रही है।"[5] कविता का यह प्रभाव नवगीत में भाषा की सहजता के रूप में पड़ा है। आज के बोध, कुरूपता, असमर्थता, पराजय आदि युग–मानस के यथार्थ चित्र नई कविता व नए गीत दोनों थाती है। सुविधा की दृष्टि से यदि हम ऐंद्रिय संवेदना के आधार पर धूमिल की कविता के बिम्बों को विभाजित करके देखे तो–गन्ध विम्ब, दृष्य बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, शब्द बिम्ब, रूप बिम्ब, इंद्रिय विपर्यपरक बिम्ब आदि बिम्ब मिलते हैं। संसद से सड़क तक में 'गंध बिम्ब' – गाय ने गोबर कर दिया।[6] कुत्ते महुए के फूल पर मूतते हैं।[7] जूते से निकाले गये पांव सा महकता हूँ।[8] एक शब्द सूँघता है।[9] उसके मुँह से खून की बू आ रही है।[10] लोरियों की गंध है।[11]

संसद से सड़क तक में 'रस बिम्ब' – एक अजीब सा–स्वाद का रुखापन है।[12] भागती हुई भूख पत्तियां चबाती हैं।[13] नमकीन धुन।[14] शब्द बिम्ब के कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है– फटे हुए दूध सा रोना।[15] संसद को बाहर आने की आवाज दी थी।[16] गुस्सा–गुर्राया है।[17] झनझनाता चाकू है।[18] एक अजीब सी प्यास भरी गुर्राहट।[19] घास की ताजगी भरी आवाज।[20] धूमिल के काव्य में रूप बिम्ब का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। यथा– मातृभाषा महरी की तरह है।[21] सिर कटे मुर्गे की तरह।[22] घास की नोंक पर थरथराती ओंस की बूंद।[23] सोहर की तरह गा रहे हैं।[24] मां का चेहरा झुर्रियों की झोली बन गया है।[25] कुत्ते मुहवे के फूल पर मूतते हैं।[26] आत्महीनता का दल–दल।[27] परंपरा को पॉलीश से चमका रहा हूँ।[28] जनमत की चढ़ी हुई नदी में सड़ा हुआ काठ।[29] पिघलते हुए शब्दों की परछाई।[30] शहर, श्मशान के अँधेरे में खड़ा है।[31], घन्टाघर में वक्त की कैंची कबूतरों के पंख कुतर रही है।[32], अन्धे अतीत और लंगड़े भविष्य की चिलम भर रही है।[33] सफेद बिल्ली अपने पंजों से कुछ शब्द भर रही है।[34] उसकी शख्सियत घास थी।[35] वह जलते हुए मकान के नीचे भी हरा था।[36] कविता में बवासीर की गांठ की तरह शब्द लहू उगलते हैं।[37] मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।[38] मैं चकतियों की जगह आंखे टांकता हूँ।[39] एक जंगल है जो आदमी पर पेड़ से वार करता है।[40] जले हुए कागज की वह तस्वीर है।[41] जो किताबों के बीच जानवर सा चुप है।[42] सूरज तुम्हारी जेब घड़ी है।[43] गीली मिट्टी की तरह हां–हां मत करो।[44] एक बूढ़ी औरत परछाई को हरियाली के किस्से सुनाती है।[45] संडास घरों में खांसी किवाड़ो का काम करती है।[46] मकान मानव संबंधों की मनोहर चित्रशाला है।[47] आदमखोर जबड़े की तरह–फाटक खुल जाता है।[48] उसके खून में बसंत का गीत बजते रहता है।[49] उसकी आंखों में कुत्ते भोंकते हैं।[50] झेंपता हुआ चेहरा–वहां एक तैरता हुआ पत्थर है।[51] जंगल की सरहद पर जलते हुए जनतंत्र में।[52] जंगल लगे अचरज से बाहर आ जाता है आदमी का भ्रम।[53] अंधी लड़की की आंखों में सहवास का सुख तलाशना है।[54] गजल आदमी को गा रही है।[55] व्याकरण की नाक पर रूमाल लापेट कर।[56] नफरत का एक डरा हुआ बिन्दु है।[57] आपके मुँह में जितनी तारीफ हैं, उससे अधिक पीक है।[58] इस कदर कायर हूँ कि, उत्तर प्रदेश हूँ।[59] चन्द खेत हथकड़ी पहने खड़े हैं।[60] सूरज मेरे जूते की नोंक पर डूब रहा है।[61] गवाह की तरह खड़े किए जाते हैं।[62], धूप कमरे में खड़ी है।[63] तुमने जंगल में बहस की है।[64] हमदर्दी चेहरों से आंसू और चमड़ा बटोरती है।[65] अकेला कवि कटघरा होता है।[66]

स्पर्श बिम्ब उनके काव्य में अर्थ योजना कराने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं– ठोस सैलाब।[67] भाषा की रात ठंडी है।[68] कुछ जलता सा हुआ है।[69] नरभक्षी जीभ ने पसीने का स्वाद चख लिया है।[70] अलंकार विधान की दृष्टि से कवि के अलंकृत बिम्ब यथार्थ पर आधारित है। जैसे– मातृभाषा महरी की तरह (उपमा)।[71] फिरंगी–हवा (रूपाकालंकार)।[72] जूते से निकाले गये पांव सा महकता (उपमा)।[73] क्रांति बच्चे के हाथों की जूजी है (रूपक)।[74] गुस्सा जनमत का नदी में सड़ा हुआ काठ है (रूपक)।[75] शहर का व्याकरण (रूपक)।[76] गन्ध बिम्ब, रस बिम्ब, शब्द बिम्ब के कतिपय उदाहरण सुदामा पाँड़े के प्रजातंत्र में देखे जा सकते हैं– दूर तक फैली हुयी गंध।[77] काम वापसी के बाद मैं दरवाजा सूंघता हूँ।[78] मरियल खौरहा कुत्ता सीवान में पड़ी फसलों की लोथ का सन्नाटा सूंघता है।[79] सब्जी में नमक ज्यादा है।[80]

तेल और लोहे की संवेदना।[81] लोहे की जीभ! उचारती है कविता के मुहावरे।[82] बन्द हत्यारे की बंदूक दगती है।[83] डफले पर बजती है भूख पैर में घंटिया।[84] सुअर का छौना किकिया रहा है।[85] उबड़–खाबड़ रास्ते जो दूध के बाल्टो को ढोल की तरह बजाते हैं।[86] होठों के बिच में एक सिसकी।[87] इसे केवल ट्रांसफॉर्मर जानता है। जो हर वक्त झनझना रहा है।[88] तुम गुर्राने लगते हो अपने खिलाफ एक बेगानी आवाज बन कर।[89] बच्चे की

भूखी चिल्लाहट में।[90] मैंने अपनी पीठ कुर्सी को दे दी।[91] बेतहाशा लौटे आदमी का मुँह धोती है बाल्टी।[92] नींद में जैसे छूरा भोंका गया।[93] बबुल के बन में बसंत से खिले थे।[94] वक्त को गंजेड़ी की तरह फूंकते रहे हो।[95] बिल्ली का पंजा चूहे का बिल है।[96] देह की इबारत के खुले हुए शब्दकोश।[97] विधवा के बेटे–सा–फक्कड़ मौलाना।[98] मैं भाषा के जबड़े में कैंसर की गांठ हूँ।[99] चानमारी पर छर्रे बीनते हुए चरवाहें।[100] कठुआये हुए चेहरों की रौनक।[101] एक फूल बसंत का दरवाजा खटखटाता है।[102] देह की अँधेरे में बिस्तर की अराजकता है।[103] हम अपने अंधेरे में मगन थे (अज्ञान)।[104] हमें अपने पड़ोसियों से भय है (संकट)।[105] जांघ से कपड़ा हटाने की जरूरत नहीं है (नंगापन)।[106] नूरजहां का राज हो।[107].

धूमिल के काव्य में अभिव्यंजना शिल्प के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि धूमिल के अधिकांश बिम्ब शब्द चित्रात्मक ही है। उनकी छोटी बड़ी सभी कविताओं में बिम्बों का एक क्रम है। ये बिम्ब चित्रमय तो हैं ही, अभिव्यंजना कराने में भी बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। उनमें न तो किसी प्रकार की असम्बद्धता है और न पहेलियों जैसी दूरारूढ़ कल्पना। धूमिल द्वारा प्रयुक्त हर शब्द अपने अभीष्ट अर्थ को देते हुए एक मूर्त चित्र प्रस्तुत करता–सा जान पड़ता है। राहुल के शब्दों में कहें तो यह कह सकते हैं कि 'धूमिल के बिम्बों में नवीनता, ताजगी तथा सांकेतिकता है। धूमिल की कविताओं में बिम्बों की समृद्धि दिखायी देती है।[108]

इस प्रकार सुदामा पाँड़े के काव्य में भाषा और शिल्प का नवीनतम प्रयोग उनकी कविता में सर्वत्र अवलोकनीय है। धूमिल ने सिद्ध साधु–सन्तों की तरह अपनी कविता को अपने ही हाथ में केन्द्रीय निग्रह की तरह रखा है ताकि उनके हाथ से लिखी कविता कही अन्यत्र भटक न जाय। लयात्मकता, प्रतीक विधान, बिम्ब विधान, शब्द विधान, तुक योजना, नये शिल्प की योजना, मुक्त छन्द, सब कुछ उनकी कविता में यथार्थ और अनुशासित लगती है।

धूमिल का अभिव्यंजनात्मक शिल्प गांव और शहर से जुड़े हैं। उनका काव्य संसार जितना बड़ा है उतना ही प्रभावशाली भी है। वे कवितावादियों में अनूठे और अद्वितीय रहे है। बिम्ववाद, प्रतीकवाद, मार्क्सवाद, प्रयोगवाद, रोमांटिक भावना तथा यथार्थवाद से उनकी काव्यात्मक विचारधारा प्रभावित रही है। कुल मिलाकर मैं यह सकती हूँ कि धूमिल के काव्य में भाषा और शिल्प पर कवि की अच्छी नव्यतम पकड़ रही है। इतना ही नहीं डॉ. जगदीश गुप्त, श्रीकांत वर्मा, चन्द्रकांत देवताले, शमशेर बहादुर, रामदरश मिश्र और सुदामा पाण्डे धूमिल की कविता की भाषा में बिम्ब विधान अप्रतिम रहा है।

साठोत्तरी कविता में प्रतीक विधान का महत्वपूर्ण स्थान है। इस परम्परा के कवियों ने सूर्य, ऊषा, तारक, नीलगगन, उदय और अस्त, आकाश, निर्झर, ग्रीष्म, मधुमास, शशि मुस्कान, ज्योतिष कण, घनीरात, मरणसेज, झणभंगुर, अर्न्तदीपक, ज्योति, दिन, रात्रि, ज्वाला, अन्धकार, तड़ित वेदना, अन्तर्दर्शन, आँखों में आँसू अनेक ऐसे प्रतीकों के प्रयोग हुए है कि ऐसा लगता है कि तद्युगीन मुक्तिबोध की कविता में प्रतीक उनकी काव्य चेतना में एक अनिवार्य तथा अविभाज्य अंग बन गया है। ये प्रतीक प्रत्येक युग के बोध को अपनी अर्थवत्ता से सम्पुष्ट करते है।

निष्कर्ष –

साठोत्तरी कविता में कविता की छान्दसिकता के साथ–साथ गद्य की सशक्तता की कोमलता का आविर्भाव हुआ है। नयी तद्युगीन कविता में छान्दसिकता के सशक्त और अशक्त दोनों रूपों के दर्शन होते हैं। वर्तमान छान्दसिक रूपों के बीच भावाक्षित काव्य रचनाएँ सम्पन्न एवं विविधतापूर्ण रूप में अभिव्यंजित हुई है। समकालीन साठोत्तरी कविता में छन्दमय उक्ति पाठकों के लिए मात्र शब्दार्थ ही नहीं देती बल्कि मनोरंजक विशिष्ट भावार्थ भी देती है।

संदर्भ –

[1] डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै – छायावादी बिम्बविधान और प्रसाद, पृष्ठ 17
[2] सम्पादक अज्ञेय – दूसरा सप्तक–भारत की आरती, पृष्ठ 100, शमशेर बहादुर सिंह
[3] रामदरश मिश्र – पक गई है धूप, पृष्ठ 23
[4] सौमित्र मोहन – लुकमान अभी तथा अन्य कवितायें, पृष्ठ 97
[5] डॉ. मदन गुलाटी – समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ 113

[6] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 12
[7] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 13
[8] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 25
[9] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 65
[10] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 66
[11] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 97
[12] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 21
[13] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 67
[14] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 99
[15] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 69
[16] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 73
[17] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 85
[18] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 110
[19] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 122
[20] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 133
[21] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 15
[22] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 15
[23] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 16
[24] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 19
[25] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 20
[26] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 23
[27] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 26
[28] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 27
[29] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 29
[30] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 29
[31] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 33
[32] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 33
[33] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 34
[34] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 35
[35] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 35
[36] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 36
[37] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 39
[38] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 41
[39] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 42
[40] वधूमिल – संसद से सड़क तक, ही, पृष्ठ 45
[41] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 47
[42] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 49
[43] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 52
[44] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 53
[45] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 55
[46] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 55
[47] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 57
[48] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 56
[49] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 57

[50] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 59
[51] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 60
[52] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 63
[53] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 65
[54] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 65
[55] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 66
[56] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 67
[57] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 68
[58] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 70
[59] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 71
[60] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 74
[61] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 81
[62] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 82
[63] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 85
[64] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 85
[65] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 86
[66] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 87
[67] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 11
[68] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 97
[69] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 113
[70] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 95
[71] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 15
[72] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 15
[73] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 25
[74] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 20
[75] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 25
[76] धूमिल – संसद से सड़क तक, पृष्ठ 61
[77] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 22
[78] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 29
[79] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 38
[80] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 67
[81] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 68
[82] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 72
[83] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 22
[84] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 36
[85] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 49
[86] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 50
[87] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 59
[88] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 62
[89] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 68
[90] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 70
[91] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 37
[92] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 72
[93] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 87

[94] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 81
[95] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 17
[96] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 18
[97] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 19
[98] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 22
[99] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 29
[100] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 45
[101] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 60
[102] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 78
[103] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 87
[104] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 26
[105] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 36
[106] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 42
[107] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 88
[108] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र, पृष्ठ 22